Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
DOI: 10.46523/jarssc.03.01.26
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 01

नयी कहानी और हिन्दी आलोचना

निरंजन राय
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग
बैसवारा डिग्री कालेज लालगंज, रायबरेली

कहानी और आलोचना दोनों आधुनिक गद्य विधाएं हैं। दोनों विधाओं की रचनाशीलता हिंदी साहित्य के क्षेत्र में कमोबेश एक साथ ही सामने दिखती है। लेकिन हिंदी आलोचना की परिधि कविता के इर्द–गिर्द ही घूमता रही जबकि हिंदी आलोचना में कहानी की समीक्षा 50 और 60 के दशक से देखने को मिलती है। यह दशक हिंदी कहानी के क्षेत्र में नई कहानी के नाम से जाना जाता है। नई कहानी के कहानीकार एवं आलोचक कहानी की स्वायत्तता एवं निजता की पहचान करते हैं। कहानी में जीवन मूल्यों की तलाश की जाती है। साथ ही हिंदी आलोचना में अब तक कहानी के प्रति बरते गए उदासीन रवैया पर सवाल भी उठाये जाते हैं। हिंदी कहानी के प्रमुख समीक्षक डॉ नामवर सिंह नई कहानी में समकालीन यथार्थ की अभिव्यक्त की पहचान करते हैं और कहानी आलोचना के लिए 'सार्थकता' एवं सोद्देश्यता विषयक आलोचनात्मक प्रतिमानों को प्रस्तावित करते हैं। वस्तुतः यह दशक हिंदी कहानी लेखन और हिंदी कहानी आलोचना दोनों के लिए उर्वर रहा। स्वतंत्रता के बाद हिंदी कहानी के क्षेत्र में अमरकांत, मारकंडेय, शेखर जोशी, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, मोहन राकेश, रेणु, निर्मल वर्मा, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी एवं शिवप्रसाद सिंह जैसे कहानीकरो की पीढ़ी कहानी लेखन के क्षेत्र में आती है। जिन्होंने अपनी रचनाशीलता से हिंदी कहनी को न सिर्फ संदर्भवान बनाया अपितु हिंदी आलोचना से कहानी मूल्यांकन के लिए अपेक्षित मांग भी की। कथा आलोचना में इस पीढ़ी के अवदान को स्वीकार करते हुए डॉ निर्मला जैन लिखती हैं ष हिंदी की कथा समीक्षा के इतिहास में छठे दशक के मध्य युवा कथाकारों की एक पूरी पीढ़ी का उदय महत्वपूर्ण घटना है''।[1]

सन 1950 के बाद हिंदी कहानी के लिए 'नई कहानी' पद का प्रयोग देखने को मिलता है। नई कहानी पद का प्रयोग संभवतः पहली बार कवि दुष्यंत कुमार ने 'कल्पना' पत्रिका के जनवरी अंक 1955 में किया था। इस पत्रिका के इसी अंक में 'नई कहानी रू परंपरा और प्रयोग' शीर्षक से दुष्यंत कुमार का एक निबंध छपा। इसी के आसपास डॉ नामवर सिंह का 'कहानी' मासिक पत्रिका में 'आज की हिंदी कहानी', सन् 1957 में शीर्षक से एक आलेख छपता है जिसमें उन्होंने यह बात चलाई कि ष्मेरे मन में यह सवाल उठता है की नई कविता की तरह नई कहानी नाम की भी कोई चीज है

Received: 01.05.2020 **Accepted:** 23.05.2020 **Published**: 23.05.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
DOI: 10.46523/jarssc.03.01.26
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 01

क्या?ष्2 कुल मिलाकर हम यह देखते हैं कि इस समय हिंदी कहानी को हिंदी आलोचना में गंभीरता से लिया जाने लगा था। वस्तुतः हिंदी कहानी के लिए नई कहानी पद का प्रयोग 1955 के आसपास इसी समय की लिखी जा रही कहानी के लिए किया गया। इससे पहले कविता के क्षेत्र में नई कविता पद का प्रयोग चल रहा था तथा साथ ही वह कविता के क्षेत्र में छायावादी प्रतिमानों से मुक्त होने का आंदोलन भी था। बहुत कुछ इसी आधार पर हिंदी कहानी का 'नयी कहानी' नामकरण होता है और कहानी के क्षेत्र में नई कहानी आंदोलन की शुरुआत होती है।

हिंदी कहानी में 'नया' नई कहानी की विशेषता को इंगित करता है। इस दौर में कहानी लेखन और कहानी समीक्षा दोनों में समय और समाज के यथार्थ के चित्रण पर बाल दिया जाता है। नई कहानी की रचनाशीलता ने हिंदी कहानी की प्रकृति में मोटे तौर पर बदलाव किया। वह यह की व्यक्ति और समाज के संबंधों के चित्रण में नए आधार की तलाश की गई और इसके साथ ही उसी के अनुरूप 'कथा ढांचे' में परिवर्तन भी होता है। व्यक्ति और समाज के संबंध चित्रण के संदर्भ में 'यथार्थ' एवं 'परिवेश' पर अत्यधिक बल दिया जाता है और शाश्वतवादी नैतिकतावादी एवं विचारधारा आधारित अमूर्त्यता का विरोध किया जाता है। कथा ढांचे के स्तर पर नई कहानी ने महत्वपूर्ण बदलाव किया। कहानी में 'घटना संयोजन' 'कार्य कारण' आधारित अथवा वृतांत कथानक एवं नाटकीयता के स्थान पर 'स्वाभाविकता' एवं 'वास्तविकता' को महत्व मिलता है। एक प्रकार से फार्मूला आधारित कहानी लेखन का निषेध नई कहानी की पहचान बन जाती है। वस्तुतः कहानी के 'कथानक' की जो नियत अवधारणा थी उसका अतिक्रमण होता है और कहानी को वर्णित करने के लिए विभिन्न कथा माध्यमों की खोज होती है। इस संदर्भ में हरिशंकर परसाई जी ने लिखा है'' जीवन के एक अंश को अंकित करने वाली हर गद्य रचनज्ञ, जिसमें कथा तत्व हो आज कहानी कहलाती है। रेखाचित्र लघु कथा, रिपोर्ट, डायरी, पत्रकथा, संस्मरण, मनःस्थिति चित्रण, इंटरव्यू आदि विविध निर्वाह पद्धति वाले गद्य खंड कहानी की परिधि में आ जाते हैं''।[3]

नई कहानी की आलोचना में यथार्थ पर विशेष आग्रह दिखता है। इस विषय पर कथाकार कमलेश्वर ने लिखा है'' नई कहानी ने घटना–संयोजन के तत्व को नकारकर कहानी के मनोवैज्ञानिक विकास की धारणा को समाप्त किया, इसीलिए उसमें से क्लाइमैक्स भी स्वयं मिट गया। मनोविज्ञान सम्मत विकास को निकालने का अर्थ यही है कि कहानी की परंपरावादी विकास पद्धति को अस्वीकार किया गया। इस पद्धति का तिरस्कार होते ही यथार्थ को कहानी की शैली का वाहक होने से मुक्ति मिली और विधा का कलात्मक श्रृंगार न रहकर आदमी की आंतरिक और बाह्य आकांक्षाओं का वाहक बन गया''।[4] वस्तुतः नई कहानी में यथार्थ को पद्धति नामांकर दृष्टिकोण के रूप में स्वीकार करने पर

Received: 01.05.2020 **Accepted:** 23.05.2020 **Published**: 23.05.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 03, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.03.01.26
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

बल दिया गया। तत्कालीन यथार्थ की अभिव्यक्ति के लिए नई कहानीकारों ने 'अनुभव तत्व' पर विशेष बल दिया है जिसके चलते नई कहानी के मूल्यांकन में 'अनुभूत की प्रमाणिकता' एवं 'भोगा हुआ यथार्थ' जैसे आलोचनात्मक प्रतिमानों का निर्धारण होता है। साथ ही नई कहानी ने यथार्थवादी वातावरण को महत्व न देकर 'व्यक्ति के परिवेश' की पहचान की एवं व्यक्ति की निजता को प्रतिष्ठित किया।

हिंदी कहानी की परंपरा का सवाल नई कहानी की आलोचना के केंद्र में रहा है। इस विषय पर सभी कहानीकार एवं ' आलोचक एकमत नहीं दिखाई देते हैं कि नई कहानी के विकास में परंपरा का योगदान रहा है या नहीं रहा है। निर्मल वर्मा कहानी की परंपरा से मुक्ति पाने की बात कहते हैं। इसीलिए नई कहानी की चर्चा का आरंभ कहानी की मौत से करते हैं। राजेंद्र यादव का मत है'' ऐसी कोई तात्कालिक परंपरा नहीं दिखाई देती जिसका तिरस्कार या विकास किया जाता'' तो कमलेश्वर का मानना है ''इस नए ने परंपरा को नहीं परंपरावाद को नकारा था''[6] तो वही कहानीकार मोहन राके का मत इस प्रकार है''।

हर नया आंदोलन परंपरा से विद्रोह करके भी वास्तव में उसका विकास करता है। इसके अलावा मारकण्डेय हरिशंकर परसाई, शेखर जोशी एवं अमरकांत के यहां परंपरा में चली आ रही कुप्रवृत्तियां व्यक्तिवादी भावुकता एवं अमूर्ता का विरोध तो है, पर परंपरा का तिरस्कार नहीं है। इस संदर्भ में हरिशंकर परसाई का मत देखना अपेक्षित होगा। वे लिखते हैं'' हिंदी कहानी की एक पुष्ट समर्थ और स्वस्थ परंपरा है और वर्तमान कहानी उसी का विकसित रूप है''।[8] दरसल सवाल यह है कि परंपरा का विरोध है और किस से मुक्ति पा लेने की चाहत। हिंदी कहानी की परंपरा में ही प्रेमचंद की साम्राज्यवाद, पूंजीवाद एवं सामंतवाद विरोधी जनवादी परंपरा भी आती है। प्रेमचंद की परंपरा को लेकर नए कहानीकार मुख्यतः दो बिंदुओं पर लड़ते हैं। बकौल राजेंद्र यादव ''प्रेमचंद की विरासत को लेकर झगड़ा दो धरातल पर है एक तो प्रेमचंद का कथा–क्षेत्र और दूसरी उनकी संवेदना दृष्टि''[9] राजेंद्र यादव के समान धर्मा कहानीकारों का मत है कि ग्रामीण यथार्थ बैलगाड़ी से देखा हुआ यथार्थ है अतः अधिक सरल एवं आत्मीय लगता है। शहर का जीवन अपेक्षाकृत ज्यादा कठिन, ज्यादा जटिल है इसीलिए हमें कहानी परंपरा को समझने के लिए 'कथा क्षेत्र' को नहीं 'संवेदना' को देखना चाहिए। वहीं शहरी यथार्थ की कहानियों पर डॉ0 शिव प्रसाद सिंह का विचार है कि वह भारतीय और जातीय साहित्य के नैतिकता के दायरे में नहीं आता है। प्रेमचंद की परंपरा को लेकर यह अनर्गल बहस हिंदी आलोचना में चलती रहती है। इस वस्तु स्थिति का ठीक–ठाक जाएगा वरिष्ठ आलोचक द्वारिका प्रसाद चारू मित्र ने लिया है। वे लिखते है'' परंपरा इस लेखक को आगे बढ़ती है जो यथार्थवादी

Received: 01.05.2020 **Accepted:** 23.05.2020 **Published**: 23.05.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) **ISSN:** 2582-2004
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre Volume 03, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.03.01.26
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

होता है, इसीलिए प्रेमचंद की परंपरा आगे बढ़ती है प्रसाद की नहीं। प्रेमचंद का युग साम्राज्यवाद, पूंजीवाद और सामंतवाद से संघर्ष का युग था और प्रेमचंद इस संघर्ष को समग्रता में चित्रित करते हैं। प्रेमचंद का विरोध व्यक्तिवादी साहित्यकारों द्वारा किया गया, जिन्होंने नित नए–नए आंदोलन चलाकर प्रेमचंद के इतिहास बोध और लेखक की पक्षधरता को ही नहीं, समकालीन यथार्थ बोध को भी दूषित किया''।[10]

नई कहानी की रचनाशीलता को रखने के दौरान दो डॉ0 नामवर सिंह 'अच्छी कहानी' 'कहानी अच्छी और नई' तथा 'कहानी पाठ की प्रक्रिया' जैसे विषयों को हिंदी आलोचना में लेकर के आते हैं इस बहस में अन्य कहानीकार एवं आलोचक भी हिस्सा लेते हैं। नामवर सिंह अच्छी कहानी की पहचान कहानी में पाठकीयता का होना है मानते हैं। वे लिखते हैं'' जो कहानी अच्छी होती है उसमें अच्छे पाठ की संभावना होती है और जो उसे भी अच्छी होती है वह अच्छे ढंग से पढ़ने के लिए निमंत्रित करती है लेकिन जो कहानी बहुत अच्छी होती है वह अच्छे ढंग से पढ़ने के लिए बाध्य करती है''।[11] इस विषय पर कहानीकार राजेंद्र यादव डॉ0 नामवर सिंह से सहमत दिखाई पड़ते हैं। राजेंद्र यादव का कहना है अच्छी कहानी वह है जो अपने को दोबारा पढ़ लेने में समर्थ है या जिसे आप ललक कर दूसरी तीसरी बार पढ़ना चाहे''।[12] वस्तुतः हिंदी कहानी आलोचना के लिए डॉ0 नामवर सिंह ने जिस महत्व की आलोचना पद्धति का विकास किया है वह है कहानी का 'गहन पाठ विश्लेषण' और इसी कारण कहानी की पाठ प्रक्रिया पर डॉ0 सिंह के द्वारा बार–बार बल दिया गया है। कहानी की पाठ प्रक्रिया को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा है'' कहानी स्वयं एक प्रक्रिया है। ऐसी प्रक्रिया जिससे होकर लेखक लिखते समय गुजरता है तो पढ़ते समय पाठक। इस प्रक्रिया को याद करें तो लिखने की प्रक्रिया के भी कुछ सूत्र हाथ आ सकते हैं, साथ ही कहानी का ज्यादा से ज्यादा रूप पकड़ में आ सकता है''।[13] सुरेंद्र चौधरी 'कहानी के सूक्ष्म एवं सक्रिय पाठ' से जोड़ते हैं वे लिखते हैं, पाठ–प्रक्रिया का संबंध मूलभूत रूप से इस प्रश्न से है कि कहानी को सूक्ष्म और सक्रिय रूप से पढ़ा जाए''।[14] और पाठ प्रक्रिया में सुरेंद्र चौधरी 'कथा स्तर' की अवधारणा लेकर आते हैं उन्होंने अर्थ निष्पत्ति के आधार पर तीन कथा स्तरों कथानक, भावात्मक एवं सांस्कृतिक स्तर की उद्भावना करते हैं।

सन्दर्भ

1. हिन्दी आलोचना की बीसवी सदी, निर्मला जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2006 पृ0 94
2. कहानी नयी कहानी, नामवर सिंह, पृ0 13

Received: 01.05.2020 **Accepted:** 23.05.2020 **Published**: 23.05.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
DOI: 10.46523/jarssc.03.01.26
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612
ISSN: 2582-2004
Volume 03, Issue 01

3. नयी कहानी सन्दर्भ और प्रकृति, संपादनः देवीशंकर अवस्थी पृ0 56–57 से उद्घृत
4. नयी कहानी की भूमिका, कमलेश्वर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2015, पृ0 84
5. कहानी स्वरूप और संवेदना, राजेन्द्र यादव, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण–1977 पृ0 77
6. नयी कहानी की भूमिका, कमलेश्वर पृ0 83
7. बलकम खुद, मोहन राकेश, पृ0 53
8. नयी कहानी सन्दर्भ और प्रकृति, संपादन देवीशंकर अवस्थी पृ0 46
9. जनवादी कहानी पृष्ठभूमि से पुनर्विचारक, रमेश उपाध्याय, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2000, पृ0 68 से उद्घृत
10. कहानी स्वरूप और संवेदना, राजेन्द्र यादव, पृ0 44
11. कहानी नयी कहानी, नामवर सिह, पृ0 138
12. नयी कहानी कहानीकारों की आलोचनात्मक दृष्टि, उषा चौहान, हिमाचल पुस्तक भण्डार, प्रथम संस्करण 1990, पृ0 134 से उद्घृत
13. कहानी नयी कहानी, नामवर सहि, पृ0 73
14. हिन्दी कहानी प्रक्रिया और पाठ, सुरेन्द्र चौधरी, पृ0 123

Received: 01.05.2020 **Accepted:** 23.05.2020 **Published**: 23.05.2020

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.